पाठ – 14 एक कहानी यह भी
MODULE - 1

लेखिका – परिचय

मन्नू भंडारी का जन्म सन् 1931 में गाँव भानपुरा , जिला – मंदसौर (म.प्र.) में हुआ परन्तु उनकी इंटर तक की शिक्षा-दीक्षा राजस्थान के अजमेर शहर में हुई l बाद में उन्होंने हिन्दी में एम.ए. किया l दिल्ली के मिरांडा हाउस कॉलेज में अध्यापन कार्य से अवकाश प्राप्ति के बाद आजकल दिल्ली में ही रहकर स्वतन्त्र लेखन कर रही है l

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य की प्रमुख हस्ताक्षर मन्नू भंडारी की प्रमुख रचनाएँ हैं – एक प्लेट सैलाब , मै हार गई , यह सच है ,त्रिशंकु (कहानी-संग्रह) आपका बंटी , महाभोज (उपन्यास) l

इसके आलावा उन्होंने फिल्म एवं टेलीविजन धारावाहिकों के लिए पटकथाएँ भी लिखी हैं l हाल ही में 'एक कहानी यह भी' नाम से आत्मकथ्य का प्रकाशन हुआ है l उनकी साहित्यिक उपलब्धियों के लिए हिन्दी अकादमी के शिखर सम्मान सहित उन्हें अनेक पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं जिनमें भारतीय भाषा परिषद् , कोलकाता , राजस्थान संगीत नाट्य अकादमी , उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के पुरस्कार शामिल है l

मन्नू भंडारी की कहानियाँ हो या उपन्यास उनमें भाषा और शिल्प की सादगी तथा प्रमाणिक अनुभूति मिलती है l उनकी रचनाओं में स्त्री-मन से जुड़ी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति भी देखी जा सकती है l

पाठ - परिचय

आत्मकथ्यात्मक शैली में रचित 'एक कहानी यह भी' के संदर्भ में सबसे पहले तो हम यह जान लें कि मन्नू भंडारी ने पारिभाषिक अर्थ में कोई सिलसिलेवार आत्मकथा नहीं लिखी है। अपने आत्मकथ्य में उन्होंने उन व्यक्तियों और घटनाओं के बारे में लिखा है जो उनके लेखकीय जीवन से जुड़े हुए हैं । संकलित अंश में मन्नू जी के किशोर जीवन से जुड़ी घटनाओं के साथ उनके पिताजी और उनके कॉलेज की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल का व्यक्तित्व विशेष तौर पर उभरकर आया है , जिन्होंने आगे चलकर उनके लेखकीय व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ।

लेखिका ने यहाँ बहुत ही खूबसूरती से साधारण लड़की के असाधारण बनने के प्रारम्भिक पड़ाव को प्रकट किया है l सन् 1946,47 की आँधी ने मन्नू जी को भी अछूता नहीं छोड़ा l छोटे शहर की युवा होती लड़की ने आज़ादी की लड़ाई में जिस तरह अपनी भागीदारी दी उससे उसका उत्साह , ओज , संगठन-क्षमता और विरोध करने का तरीका देखते ही बनता है l

शब्दार्थ

अहमवादी – घमंडी , भग्नावशेष – खंडहर (टूटे-फूटे हिस्से)
विस्फारित – और अधिक फैलाना (बढ़ाना) , आक्रांत - कष्टग्रस्त
वर्चस्व – दबदबा , निषिद्ध – जिस पर रोक लगे गई हो ,
अनिवार्य – ज़रूरी , प्रशंसा – तारीफ , खामियाँ – कमियाँ .
दरयादिल – खुले दिल का , अचेतन – बेहोश , शक्की – वहमी
विवशता – मजबूरी , बेपढ़ी – अनपढ़ , शीर्ष – मुख्य ,
यातना – कष्ट , कुंठा – हीन भावना , प्रवाह – गति ,
अहमियत – महत्व , निषेध – मनाही , हकीकत - सच्चाई ,
भभकना – अत्यन्त क्रोधित होना , प्रबल – तेज ,
आँख मूँदना – मर जाना , आह्वान – पुकार l

समाप्त